ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 15 कुल पृष्ठ-4 **26 मार्च से 1 अप्रैल, 2020** दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 चै. शु.-03

त्याग और समर्पण भाव से कार्य करते हुए आर्य समाज के माध्यम से सामाजिक बुराईयों को युद्ध स्तर पर विनष्ट करने का लें संकल्प

कोरोना वायरस से उपजी आपदा में आर्य समाज हर स्तर पर सहायता कार्य करने के लिए हो कटिबद्ध

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आर्यजनों को आह्वान

भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा प्रातःस्मरणीय स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिनांक 7 अप्रैल, 1875 को मुम्बई में की थी। आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर हम सब लोग पूर्ण उत्साह और सकारात्मक कार्यक्रमों के साथ आर्य समाज को समुन्नत और तेजस्वी बनाने का संकल्प लें। अब केवल औपचारिकता से काम चलने वाला नहीं है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना के साथ ही हम सबको समाज की बुराईयों से लड़ने की प्रेरणा की थी तथा एक उत्कृष्ट समाज की परिकल्पना भी की थी जिसमें सामाजिक बुराई, धार्मिक अन्धविश्वास, जातिवाद, घृणा एवं द्वेष, कटुता, अज्ञान हमारे समाज में लेशमात्र भी न हो। एक श्रेष्ठ समाज जिसमें किसी भी प्रकार की असमानता एवं भेदभाव न हो इसके लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। सामाजिक बुराईयाँ मिटाकर तथा अवैदिक मान्यताओं से समाज को मुक्त कराकर आर्य (श्रेष्ठ) समाज की स्थापना करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इसीलिए स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने आर्य समाज के छठें नियम में स्पष्ट कहा कि ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'' अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

इस संगठन ने धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, नारी उत्थान आदि सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी कार्य करके महर्षि दयानन्द जी के मन्तव्यों को आगे बढ़ाने का कार्य किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भारतीयों के खोये हुए आत्म सम्मान को जगाया, स्वाधीनता का समाघोष लगाया, वेद की ज्योति प्रज्ज्वलित कर भारतीयों को संस्कारित किया, विश्वगुरु भारत के इतिहास का स्मरण कराकर भारतीयों को अपनी शक्ति का एहसास कराया, सामाजिक कुरीतियों तथा धार्मिक अन्धविश्वास का उन्मूलन किया, गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पुनरूत्थान किया, नारी शिक्षा पर बल दिया, जातिवाद और अस्पृष्यता पर प्रहार किया और प्राचीन जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना की। महर्षि दयानन्द जी के इन कार्यों को आर्य समाज ने आगे बढ़ाया। जब भी धर्म, संस्कृति, राष्ट्र, महापुरुषों आदि पर संकट आया या कोई प्राकृतिक आपदा आई तो आर्य समाज तन–मन–धन से पूर्ण समर्पण के साथ आगे खड़ा हुआ। आर्य समाज की विचारधारा में बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की भावना आद्यन्त विद्यमान है। यही एक ऐसी विचारधारा है जो मानव मात्र को सीधा सच्चा और सरल मार्ग दिखा सकती है। वर्तमान में पूरे विश्व को इसकी प्रबल आवश्यकता है।

आर्य शब्द गुणवाचक है, जाति एवं नस्लवाचक नहीं। यदि हमारे अन्दर आर्यत्व के गुण हैं तभी हम सच्चे अर्थों में आर्य कहलाने के अधिकारी हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने चिन्तन दिया कि पहले आर्य बनो। अपने जीवन को श्रेष्ठ, पवित्र, आस्तिक और वेदानुकूल बनाओ और अन्यों को भी इन विचारों से प्रेरित करो। यह विचारधारा

क्रियात्मक चिन्तन पर बल देती है। आर्य समाज अपने अतीत में अत्यन्त संघर्षरत रहा और इसी कारण बहुत कुछ कर सका। संघर्ष के बिना आर्य अधूरा हैं। संघर्ष के द्वारा मिलने वाली शक्ति से आज हम दूर हो रहे हैं। यदि आर्य समाज को पुनः तेजस्वी बनाना है तो सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध कठिन संघर्ष करना होगा, अपने अन्दर की क्षात्र शक्ति को जगाना होगा। आज हम सभी अपने अतीत को जानकर गौरव अनुभव करते हैं, परन्तु इससे काम नहीं चलेगा। हमें अपना दायित्व समझना है और आने वाली चुनौतियों का सफलता के साथ सामना करना है और आर्य समाज को उसके उद्देश्य के चरम तक पहुँचाना है। आज के इस युग में आर्य समाज की आवश्यकता को सब जनता स्वीकार करे ऐसे कार्य हमें करने हैं।

आर्य समाज ने जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नारी उत्पीड़न, धार्मिक पाखण्ड, गौहत्या और नशाखोरी के विरुद्ध बिगुल फूंक रखा है। ये सात मुद्दे मानवता के नाम पर कलंक हैं। जो हर देशवासी को चुनौती दे रहे हैं। शिक्षा, संस्कार, संस्कृति को लेकर भी आर्य समाज ने आन्दोलन छेड़ रखा है। मेरी आप सभी से अपील है कि आप सब उपर्युक्त मुद्दों को लेकर गम्भीर हों और आर्य समाज को सक्रिय करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायें।

आर्य समाज अपने स्तर पर कार्य तो बहुत कर रहा है लेकिन हमारा कार्य लोगों के सामने नहीं पहुँच पा रहा। हम अपने कार्यक्रमों को आर्य समाज के भवनों से बाहर निकालकर बाजारों में, मैदानों तथा सार्वजनिक स्थलों पर आयोजित करें तो आम जनता को हमारे कार्यक्रमों का पता चलेगा। समाज में व्याप्त ज्वलन्त समस्याओं को लेकर आन्दोलनात्मक तरीके से कार्यक्रम आयोजित करें, रैली निकालें, धरने दें, झण्डे तथा बैनरों के साथ प्रदर्शन करें तो जनता तो आकर्षित होगी ही तथा आर्य समाज का आन्दोलनकारी स्वरूप भी प्रकट होगा। इसके अतिरिक्त हम जो भी कार्यक्रम आयोजित करें उसे पत्र–पत्रिकाओं में छपने के लिए अवश्य दें। इलेक्ट्रानिक मीडिया में भेजें तथा अन्य प्रचार साधनों का भरपूर उपयोग करें तो हमारे कार्यक्रम आम जनता तक पहुँच पायेंगे और लोग हमसे भारी संख्या में जुड़ेंगे।

हम विभिन्न कार्यक्रमों को अपनाकर अपना बहुआयामी स्वरूप जनता के सामने ला सकते हैं इससे न केवल आर्य समाज को पहचान मिलेगी अपितु इससे सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में हम अग्रणी बनकर कार्य कर सकेंगे तथा निश्चित रूप से हम मानवता के हित में समाज और राष्ट्र के हित में एक ठोस कदम उठा पायेंगे तो आईये! आर्य समाज के माध्यम से देश को नई दिशा प्रदान करने का संकल्प लें और आर्य समाज स्थापना दिवस को सार्थक करें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी भावनाओं को ध्यान में रखकर आप सभी पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से आर्य समाज के कार्यों में प्राणपण से जुटेंगे और आर्य समाज को तेजस्वी बनाने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। उपरोक्त सभी कार्यक्रम एवं दिशा निर्देश पूरे विश्व के आर्यजनों के लिए आर्य समाज के भावी कार्यक्रम के रूप में आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर प्रस्तुत किये गये हैं, किन्तु इन्हें क्रियान्वित करने के लिए हमें तब तक इन्तजार करना पड़ेगा जब तक कि कोरोना के प्रकोप से हमारा देश एवं पूरा विश्व मुक्त नहीं हो जाता, क्योंकि वर्तमान समय में हम सभी को इस महामारी के विरुद्ध अपना दायित्व निभाते हुए सेवा के कार्यों में जुटना है।

वर्तमान समय में कोरोना वायरस ने भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में कोहराम मचा रखा है। लाखों व्यक्ति इससे संक्रमित हो चुके हैं और कई हजार व्यक्ति मौत के ग्रास बन चुके हैं। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अत्यन्त मार्मिक अपील करके देश में तीन सप्ताह के लिए लॉकडाउन की घोषणा की है और देशवासियों से आह्वान किया कि वे 'कोरोना' कोई भी रोड पर न निकलें' अर्थात् सभी अपने घरों में रहें। आर्य समाज प्रधानमंत्री जी के इस निर्णय का पुरजोर समर्थन करता है और देशवासियों से अपील करता है कि वे इसे राष्ट्रीय

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

महर्षि दयानन्द कृत व्यवहारभानु – एक झलक

– डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री

महर्षि दयानन्द (1825–1883) के समस्त साहित्य में व्यवहारभानु पुस्तक (प्रथम संस्करण 1879 ई.) का अलग स्थान है। यों तो स्वामी जी ने समस्त साहित्य गंभीर शैली में लिखा है, पर लगभग पचास पृष्ठ की यह एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसमें उन्होंने दृष्टान्तों, उदाहरणों, कहानियों, लोककथाओं आदि का खुलकर उपयोग करके इसे रोचक शैली में लिखा है। 'अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा' वाली उस लोककथा का भी इसमें उपयोग किया गया है जिस पर हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850–1885) ने बाद में 'अंधेर नगरी' (1881 ई.) नाम से एक नाटक भी लिखा था। महर्षि ने यह पुस्तक प्रश्नोत्तर, संवाद और व्याख्यान की मिश्रित शैली में मूलतः हिन्दी में लिखी थी, जो पर्याप्त लोकप्रिय हुई। हिन्दी में तो उसके अनेक संस्करण छपे ही, गुजराती, बांग्ला, उड़िया, मलयालम, संस्कृत आदि भारतीय भाषाओं के साथ ही उसका अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ।

महर्षि ने इसे 'पठन–पाठन व्यवस्था की पुस्तक' कहा है। पठन–पाठन शब्द सुनते ही हमें विद्यालय की याद आ जाती है जहाँ शिक्षक मुख्य रूप से औपचारिक पठन–पाठन कराता है। हम यह भूल जाते हैं कि पठन–पाठन औपचारिक तो बाद में होता है, सबसे पहले अनौपचारिक होता है, जिसकी शुरुआत माता से हो जाती है, और फिर इसके सूत्र परिवार में पिता एवं अन्य सदस्यों, मित्रों, सम्बन्धियों, परिचितों–अपरिचितों आदि से होते हुए बहुत दूर तक जाते हैं। वास्तविकता यह है कि यह आजीवन चलता रहता है। इसलिए अपने विशिष्ट अर्थ में इसका महत्व औपचारिक पठन–पाठन से भी अधिक होता है। इस पुस्तक में महर्षि ने अनौपचारिक पठन–पाठन से सम्बन्धित छोटी–बड़ी बातों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है, और प्रसंगवश, यत्र–तत्र औपचारिक पठन–पाठन की भी चर्चा की है। अतः इस पुस्तक का सम्बन्ध हर बच्चे से और बच्चों के सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति से है। महर्षि के शब्दों में, उन्होंने इस पुस्तक में 'बालक से ले के वृद्ध पर्यन्त मनुष्यों के सुधार के अर्थ व्यवहार सम्बन्धी शिक्षा का विधान किया' है।

इस पुस्तक में यह बताया गया है कि परिवार में माता–पिता और संतान, विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी, प्रशासन में शासक और शासित, राजनीति में नेता और जनता, बाजार में क्रेता और विक्रेता आदि विभिन्न रूपों में हमें किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, और इसके लिए जो गुण अपेक्षित हैं, उनका अर्जन कैसे किया जा सकता है। आज इन सभी सम्बन्धों में जो विकृतियाँ आई हैं, उन्हें देखते हुए इस पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है।

ekrk&firk vkj vkpk;l dk nkf;Ro : संतान को योग्य बनाना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं। यह कार्य तभी सम्पन्न हो सकता है जब माता–पिता और आचार्य तीनों अपने–अपने दायित्वों का सम्यक पालन करें। इसकी शुरुआत माता–पिता से होती है, और इसकी तैयारी गर्भाधान से पहले ही शुरू हो जाती है, गर्भ के दौरान चलती रहती है और बच्चे के जन्म के बाद विभिन्न रूप धारण कर लेती है।

सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास के प्रारम्भ में महर्षि ने शतपथ ब्राह्मण का जो वाक्य उद्धृत करते हुए लिखा है कि जब माता, पिता और आचार्य तीनों उत्तम शिक्षक होते हैं, तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है, उसका यहाँ भी उल्लेख किया है। ये तीनों लोग अपनी भूमिका ठीक ढंग से किस प्रकार निभा सकते हैं, इस पुस्तक में वह अच्छी तरह स्पष्ट किया गया है।

माता–पिता और आचार्य का दायित्व है कि बच्चों को शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करने, गाली–गलौज आदि अपशब्दों से रहित शिष्ट भाषा बोलने, अनर्गल बातें न करने, खाने–पीने, उठने–बैठने, वस्त्रधारण करने, माता–पिता आदि का सम्मान करने, उनके सामने अपना मनमाना व्यवहार न करने, विरुद्ध चेष्टा न करने आदि का उपदेश करें। कई बार माता–पिता अपने लाड़–प्यार में बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार करने लगते हैं जो उचित नहीं। कभी बाल–क्रीड़ा का आनन्द लेने के लिए कहते है कि इसके बाल खींच लो, इसके कपड़े छीन लो, या मानों उन्हें 'साहसी' बनाने के लिए कहते हैं, इसने तुम्हें गाली दी, तुम भी गाली दो, इसने तुम्हें मारा, तुम भी उसे मारो। वे भूल जाते हैं कि इससे बच्चा असभ्य और अनुशासनहीन बनेगा। ऐसे ही कभी कहते हैं कि जल्दी से तुम्हारी शादी कर देंगे। उनका ध्यान नहीं जाता कि बच्चे को शादी योग्य बनने से पहले ब्रह्मचर्य आश्रम की तपस्या करनी है, अतः उसे इस आश्रम का पालन करने योग्य बनने की प्रेरणा देनी चाहिए, न कि उससे विरत होने की। इसीलिए महर्षि ने ऐसी सब बातों को 'कुशिक्षा' कहा है और ऐसी शिक्षा देने वालों को 'संतान का शत्रु, कुमाता, कुपिता' बताया है। उनके अनुसार माता–पिता का कर्तव्य है कि बच्चों को हमेशा सद्गुणों का उपदेश करें, कर्तव्य पालन की प्रेरणा दें, धर्म–अधर्म, सच–झूठ का अंतर समझाएँ, पाखण्ड का खंडन करें, वेद–शास्त्र आदि का यथावत् ज्ञान कराएँ, इनके वचन कंठस्थ कराएँ, ईश्वर की उपासना करना सिखाएँ आदि।

बाल्यावस्था मानव जीवन का अत्यन्त मूल्यवान समय है, इसे नष्ट न होने दें। इसके एक–एक क्षण का सदुपयोग करें।

व्यक्ति को योग्य बनाने में माता–पिता के समान ही शिक्षकों और उपदेशकों की भूमिका है।

उनमें कतिपय विशिष्ट गुण होने चाहिए तभी वे अपने दायित्वों का सम्यक् निर्वाह कर पाएँगे। उनसे अपेक्षित है कि वे ज्ञानी हों, वेद सहित विभिन्न विषयों के ज्ञाता हों, पर अभिमानी न हों। अत्यन्त प्रेम से धर्मयुक्त व्यवहार करने वाले हों। आवश्यक होने पर कठोर व्यवहार भी करें, पर यह कठोरता ऊपर से ही हो, भीतर से कृपादृष्टि बनी रहे। शान्त होकर प्रश्नों के उत्तर देने वाले हों। जिन बातों को नहीं जानते, उन्हें भी तर्क के माध्यम से शीघ्र जानने–समझने की योग्यता वाले हों। कोरे ज्ञानी नहीं, बल्कि पठित ज्ञान के अनुरूप आचरण करने वाले हों, अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा एकरूप व्यवहार करते हों। उनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक आदि दुर्गुण न हों। वे आलसी न हों, परिश्रमी हों। सुख–दुःख सब बर्दाश्त करें, पर किसी भी लालच से धर्म का त्याग न करें। अपनी सामर्थ्य का विचार किए बिना बड़े–बड़े मनोरथ करने वाले या बिना परिश्रम के बड़े–बड़े कामों की इच्छा करने वाले, अपनी–दूसरों की अनावश्यक प्रशंसा करने वाले मूढ़ बुद्धि न हों। पढ़ाते समय शिक्षक ऐसी रीति अपनाएँ जिससे विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ता जाए। दृष्टान्त देकर, क्रियात्मक काम करके, यंत्रों का उपयोग करके, कलाकौशल, विचार आदि का ऐसा प्रयोग करें जिससे विद्यार्थी एक के जानने से हजारों अन्य पदार्थ यथावत् जान जाएँ। बुद्धि को बढ़ाने वाली क्रियाओं का अभ्यास कराएँ जिससे सत्य धर्म के प्रति निष्ठा विकसित हो।

lrku dk xq.k % जिस प्रकार माता–पिता और शिक्षकों से कुछ गुण अपेक्षित हैं, उसी प्रकार बच्चों, विद्यार्थियों से भी अपेक्षा है कि वे सच बोलें, सरल रहें, अभिमान न करें, निष्कपट रहें, आज्ञापालन करें, शान्त रहें, निन्दा न करें, चपलता न करें, माता, पिता, अध्यापक से ऊँचे आसन पर न बैठें, नीचे बैठें, ताड़ना पर क्रोध न करें, उनकी बात ध्यान देकर सुनें। शरीर, वस्त्र और अपना परिवेश साफ रखें। जो प्रतिज्ञा करें उसे पूरा करें। उपकार को मानें। आलसी न हों, पुरुषार्थी बनें।

काम–क्रोध–लोभ–मोह–भय आदि विद्या–विरोधी दुर्गुणों को छोड़कर उत्तम गुण अपनाएँ। नशे के पदार्थ बुद्धि का नाश करते हैं, अतः वे कभी ग्रहण न करें। नियमित रूप से योगाभ्यास करें। ब्रह्मचर्य का पालन करके जितेन्द्रिय बनें और धर्मयुक्त आचरण करें। बड़ा होने पर माता–पिता आदि की सेवा अवश्य करें क्योंकि बाल्यावस्था में वे ही पालन पोषण एवं शिक्षण करते हैं, अतः उनकी सेवा करना परम धर्म है।

f'k{kk dk vFk vkj egRo : महर्षि के अनुसार शिक्षा का अर्थ किताबें रटना नहीं है, बल्कि शुभ गुण अर्जित करना है। विद्या कहते ही उसे हैं जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत जाना जाए और फिर उसका

उपयोग करके अपने लिए एवं दूसरों के लिए सुख की सिद्धि की जाए। यह क्रिया चार चरणों में सम्पन्न होती है– आगम (ध्यान देकर पढ़ाने वाले से विद्या ग्रहण करना), स्वाध्याय (जो कुछ पढ़ा उसे एकान्त में स्वस्थ चित्त होकर हृदय में दृढ़ करना), प्रवचन (पढ़ी हुई सामग्री दूसरों को प्रीतिपूर्वक पढ़ा सकना) और व्यवहारकाल (जो कुछ सीखा है उसके अनुरूप आचरण करना)। इसे ही कुछ विद्वानों ने श्रवण (सुनना), मनन (पढ़ी हुई सामग्री पर चिन्तन करना), निदिध्यासन (जो कुछ पढ़ा–सुना है, उसकी विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना) और साक्षात्कार (सीखे हुए ज्ञान को क्रिया से प्रत्यक्ष करना) कहा है। महर्षि ने विद्या में शुद्ध वर्णोच्चारण, व्यवहार की शुद्धि, पुरुषार्थ, धार्मिक विद्वानों के संग, विषयकथाप्रसंग के त्याग, सुविचार आदि पर विशेष बल दिया है और विभिन्न विद्याओं से सम्बन्धित जो सत्यग्रन्थ हैं उनके अध्ययन की प्रेरणा दी है ताकि फिर व्यक्ति वेद आदि साध्य ग्रन्थों के अर्थ जान सके और स्वयं धार्मिक बनकर धार्मिकता का प्रसार करे ।

कुछ लोग शिक्षाद्वेषी होते हैं वे सोचते हैं कि पढ़–लिखकर क्या करना? मरना तो सबको है, चाहे पढ़ो या न पढ़ो। ऐशो–आराम से जीना हमारा उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए पैसा चाहिए, पढ़ाई किसी काम की नहीं। देखो न, अनेक पढ़े–लिखे लोग दरिद्र होते हैं और अनपढ़ धनवान होते हैं। धन पर अनावश्यक बल देने वाली इस मानसिकता से समाज का बहुत अहित हुआ है। विद्या की उपेक्षा करने के कारण ही अज्ञान फैला, अंधविश्वास का अंधकार घिर गया, कुरीतियों–कुप्रथाओं ने जकड़ लिया। महर्षि ने विद्या का महत्व बताते हुए कहा है कि विद्या का प्रयोजन यह नहीं है कि इससे जन्म–मरण जैसा ईश्वरीय नियम बदल जाएगा।

मानव जीवन का उद्देश्य भी केवल ऐशो–आराम से जीना नहीं है, बल्कि मानव जीवन के चार उद्देश्य हैं–

धर्म–अर्थ–काम और मोक्ष की सिद्धि। विद्या से ही हमें इन चारों का यथावत् ज्ञान होता है और इनकी सिद्धि के उपायों की जानकारी मिलती है।

f'k{kk lcds fy, % पहले अनेक लोग यह मानते थे (आज भी कुछ लोगों में इस मान्यता के अवशेष देखे जा सकते हैं) कि शिक्षा केवल सवर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों) के लिए आवश्यक है, शूद्रों के लिए नहीं, और स्त्रियाँ चाहे सवर्ण हों या असवर्ण, उन्हें तो पढ़ाना ही नहीं चाहिए क्योंकि वेदों में ऐसा कहा गया है (स्त्री शूद्रौ ना धीयताम् इति श्रुतेः)। महर्षि ने इस मान्यता का खण्डन किया और बताया कि वेद के नाम पर यह नितान्त झूठी बात कही जाती है। वेदों में ऐसा कहीं नहीं कहा गया है, बल्कि वहाँ तो सबके लिए शिक्षा आवश्यक बताई है। तर्क से भी यही सिद्ध होता है कि शिक्षा सबको मिलनी चाहिए ताकि सभी लोग धार्मिक (अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा श्रेष्ठ आचरण करने वाले) बनें। यह सच है कि विशेष अध्ययन करके विद्वान् तो कुछ ही लोग बनेंगे, पर धार्मिक तो सब लोगों को बनना चाहिए। यहाँ महर्षि ने धार्मिक का विशिष्ट अर्थ में प्रयोग किया है। उनका आशय है (क) विद्या की वृद्धि (स्वयं विद्या प्राप्त करना, विवेक शील बनना, अपनी सन्तान को एवं अन्य लोगों को विद्यादान करना–कराना), (ख) परोपकार (शरीर और मन से उद्योग करना और धन से कारखाने आदि खोल कर अनेक लोगों की जीविका का प्रबंध करना), (ग) अनाथों का पालन (बालक, वृद्ध, या अंग–भंग हो जाने के कारण जो अपना पालन स्वयं नहीं कर सकते, उनका पालन) इस प्रकार करना ताकि वे जितना काम कर सकते हैं उतना अवश्य करें, आलसी निकम्मे न बनें), और (घ) अपने सम्बन्धियों की रक्षा जैसे कार्य सबको करने चाहिए।

lR; vlR; dk fu.k; % लोग अकसर कहते हैं कि सत्य क्या है, असत्य क्या है, इसका पता हम कैसे लगाएँ? महर्षि ने इसके पाँच साधन बताए हैं–

(1) ईश्वर, उसके गुण कर्म स्वभाव और वेद विद्या (जैसे, ईश्वर का गुण है कि वह निराकार है, सर्वव्यापक है, अन्तर्यामी है, फिर भी अगर कोई उसकी मूर्ति बनाता है तो यह ईश्वर के गुणों के विपरीत होने के कारण असत्य हुई)।

(2) सृष्टिक्रम (जैसे, कोई कहे कि बिना माता–पिता के संतान का जन्म हुआ, तो सृष्टिक्रम के विरुद्ध होने से यह असत्य है)।

(3) प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य अर्थात् इतिहास, अर्थापत्ति अर्थात् एक बात सुनकर दूसरी बात प्रसंग से जान लेना, संभव और अभाव)।

(4) आप्त अर्थात् सर्वहितैषी विद्वानों का आचार, उपदेश, ग्रन्थ और सिद्धांत (5) अपनी आत्मा की साक्षी, अनुकूलता, जिज्ञासा, पवित्रता और विज्ञान। जो इन परीक्षाओं पर खरा उतरे, उसे ही सत्य मानें।

ifr&iRuh dk O;ogkj % पति–पत्नी को कोई ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जो एक दूसरे को पसन्द न हो। उनके बीच प्रेम और विश्वास का व्यवहार होना चाहिए। दोनों परस्पर एक दूसरे की सेवा करें। एक दूसरे की रुचि का ध्यान रखें। जब पति–पत्नी एक दूसरे से संतुष्ट होते हैं तभी परिवार में सुख शान्ति का वास होता है, परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ती है, धन–संपदा की प्राप्ति होती है, और संतान उत्तम बनती है। इसके लिए आवश्यक है कि दोनों ब्रह्मचर्य आश्रम में यथाविधि शिक्षा प्राप्त करें, युवा हो जाने पर ही विवाह करें, विवाह स्वयंवर विधि से करें, और गृहस्थाश्रम के आदर्शों का पालन करें।

euq"; dk xq.k % मनुष्य में कुछ ऐसे गुण हैं जो अन्य प्राणियों में नहीं पाए जाते। जैसे विद्यार्जन करना और उनके अनुरूप जीवन जीना मनुष्य की ही विशेषता है। इसी प्रकार जहाँ अन्य सब प्राणी बलवान से डरते हैं और निर्बल को सताते हैं, वहीं मनुष्य की विशेषता है कि वह निर्बल पर दया करता है और उनकी रक्षा करता है। उन्हें पीड़ा देने वाले अधर्मी बलवान से भी नहीं डरता। ऐसे गुणों के कारण ही मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ माना जाता है। हर मनुष्य को ऐसे गुण अर्जित करने ही चाहिए।

lHkk esa O;ogkj % जब सभा आदि में जाएँ तो यह दृढ़ निश्चय करके जाएँ कि मैं सत्य के ही पक्ष में रहूँगा। सभा में दूसरों की बात ध्यान देकर सुनें। वह सत्य हो तो प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करें, असत्य हो तो खंडन करें। यदि कोई प्रतिज्ञा करनी हो तो ऐसी ही करें जो सत्य के अनुरूप हो, और उसे यथावत् पूरा करें। बड़ाई–छोटाई न गिनें। व्यर्थ बकबाद न करें। अभिमान न करें, अपने को बड़ा न मानें। उचित स्थान पर बैठें और ऐसे ढंग से बैठें–उठें जो किसी को बुरा न लगे। सज्जनों का संग करें और दुष्टों से अलग रहें। सर्वहित पर दृष्टि रखें।

lR; O;ogkj : अकसर लोग कहते हैं कि क्रेता–विक्रेता के बीच व्यापार में, या हार–जीत के प्रसंग में जीत के लिए सच से काम नहीं चलता, झूठ का व्यवहार करना ही पड़ता है। पर महर्षि ने उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि व्यापार की बात हो या हार–जीत की, सच के व्यवहार से वह बिलकुल सुगम हो जाती है, जबकि झूठ के व्यवहार के परिणाम हमेशा कष्ट देने वाले होते हैं। इसी प्रकार राजा और प्रजा (शासक और शासित) के बीच सत्य का धर्मयुक्त व्यवहार होना चाहिए। राजा अपनी प्रजा को सन्तान के समान समझे, श्रेष्ठ लोगों की रक्षा करे, दुष्टों को यथायोग्य दण्ड दे, और प्रजा की सुख–सुविधा का पूरा ध्यान रखे। प्रजा अपने धर्मयुक्त व्यवहार से अपने कार्य सिद्ध करके यथाविधि 'कर' का भुगतान करे। राजा हो या प्रजा, जब वह केवल अपना–अपना हित सिद्ध करने की कोशिश करते हैं, तो फिर वे राजा–प्रजा के बजाय एक दूसरे के शत्रु, चोर, डाकू आदि कहलाते हैं।

इस प्रकार व्यवहार की छोटी–छोटी बातों की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करने के कारण यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

इन दिनों माता–पिता के पास अपने बच्चों को देने के लिए 'सुविधाएँ' तो हैं, पर 'समय' नहीं है। आवश्यकता यह है कि बच्चों को खिलौने, पैसे और नए–नए उत्पाद देने के साथ ही उन्हें वह समय दिया जाए जिसे अंग्रेजी में 'क्वालिटी टाइम' कहते हैं, ताकि उनकी छोटी–बड़ी हर बात पर ध्यान दिया जा सके। उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति, और संस्कारों से अवगत कराया जा सके। उन्हें सामाजिकता का पाठ पढ़ाया जा सके, और नैतिकता की भी शिक्षा दी जा सके। हमारी परम्परा में इसे ही 'धर्म' कहा गया है। याद रखिए, दुनिया कितनी भी बदल जाए, बच्चों की पहली पाठशाला घर ही होती है, हाड़–मांस के पुतले में मनुष्यत्व की प्रतिष्ठा करने वाला घर ही होता है, व्यक्तित्व की सुदृढ़ आधारशिला बनाने वाला अपना घर ही होता है।

– पी/138, एम आई जी, पल्लवपुरम–2, मेरठ 250110, चलभाष– 09758184432

साभार – सत्यार्थ सौरभ (मासिक पत्रिका)

राम नवमी पर विशेष

श्री राम का बहुआयामी व्यक्तित्व

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का स्मरण आते ही त्रेतायुग की विशेषताओं का ध्यान आ जाता है। काल चक्र का इतिहास सदा से चलता आया है, सम्प्रति चल रहा है और प्रलय आने तक चलता रहेगा। प्रामाणिक तथ्यों के अनुसार रामचन्द्र जी को आज से 8,90000 लाख वर्ष हो चुके हैं। हमारी काल गणना सतयुग (17,28000 वर्ष) त्रेतायुग (12,96000 वर्ष) द्वापर युग (864,000 वर्ष) तथा कलियुग (8,32,000 वर्ष) कुलयोग 43,20,000 वर्ष माने गए हैं। पश्चिमी विद्वानों ने अपने भौतिक ज्ञान के अनुसार काल का वर्गीकरण इस प्रकार किया हैः-

1. पाषाणकाल 20,000 ई. पूर्व (घुमन्तू, शिकारी जीवन), 2. नव पाषाण काल 8,000 वर्ष ई. पूर्व, 3. ताम्रयुग 4,000 ई. पूर्व (धातु की खोज, कृषि आधारित नगरों की बसाहट, 4. कांस्ययुग 3,000 ई. पूर्व (भारतीय सभ्यता का विकास) तथा अंतिम लौह युग 1,800 ई. पूर्व (आवागमन व्यापारिक क्रांति तथा पुराने युग की समाप्ति।

पश्चिमी सभ्यता के नापने का मानदंड ईसा की जन्म तिथि है, जब कि वैदिकी वर्षों को जानने का मापदण्ड सृष्टि उत्पत्ति से माना गया है। भारतीय गणित ज्योतिष के अनुसार सावन-1984456003, कल्प-1972949104, मानव 1955885104 तथा कलि 5104 वर्ष है। इन तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि पश्चिमी जगत के विद्वानों का काल गणना का मापदण्ड हम वैदिकों से कितना पिछड़ा हुआ है। एक विद्वान ने ठीक ही कहा है कि जिन दिनों हमारे यहां उपनिशद काल में ऋषि मुनिगण उच्चकोटि का चिन्तन कर रहे थे उन दिनों पश्चिमी जगत के विद्वानों के पूर्वज जंगली अवस्था में बन्दरों के समान वृक्षों की डालियों पर उछल कूद रहे थे। भारतीय आर्य ऋषिगण जब यूरोप आदि होते हुए वहां पहुंचे, तब वहां सभ्यता और संस्कृति सम्बन्धी किरणों का आभास उन्हें जंगलियों को हुआ था। हमारे आर्य पूर्वज वहीं बस गये और वहीं रहकर ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। विश्व को संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान देने वाला भारत (भा=प्रकाश, रत=प्रसारक) ही है।

जयशंकर प्रसाद के शब्दों में हम कहीं बाहर से नहीं आये थे अर्थात् भारतीय आर्य ही अपने नाम के अनुसार 'ज्ञान, भक्ति और गमन' निन्तर आगे बढ़ते गए। हमारे यहां ही नालन्दा और तक्षशिला के महान शिक्षालयों में पश्चिमी जगत के देशों के लोग शिक्षा ग्रहण करने आते थे।

इन तीनों प्रकारों की कालगणना प्रस्तुत करने का एकमात्र कारण यह है कि अनेक इतिहासकार या तो राम के जन्म को मानते ही नहीं हैं, यदि स्वीकार करते हैं तो उन्हें 6 या 7 हजार वर्ष पूर्व का ही मानते हैं। कतिपय विद्वान् राम-रावण का युद्ध को अद्यतन रागात्मक प्रवृत्तियों का संघर्ष मानकर संतोष कर लेते हैं। ऐसे विद्वान् हीन भावनाओं से ग्रसित दिखाई देते हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम को हमने भगवान कहा है, परन्तु भगवान की यह परिभाषा है-

ऐश्वर्यस्य, समग्रस्य, वीर्यस्य, यशसाः श्रियः।

ज्ञान, वैराग्य, योश्चैव षण्णा भग इतिरणा अर्थात् ऐश्वर्य, वीर्य (पराक्रम) यश, श्री, ज्ञान तथा वैराग्य इन 6 गुणों से युक्त (अलंकृत) मनुष्य ही भग् वान्कहलाता है। यह पद स्थापना ऐसे गुण धारियों को समाज प्रदान करता है। परमात्मा और भगवान इन दो शब्दों में आकाश- पाताल का अन्तर होता है। परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा न्यायकारी और दयालु होता है। जबकि भगवान जीवात्मा होने के कारण अल्पज्ञ, अल्प सामर्थ्य वाला, रज-वीर्य उत्पन्न, जरामरण वाला तथा एक वेशीय होता है।

हमारे आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम अनेक लौकिक गुणों से परिपूर्ण थे। उनके सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टिपात करने पर निम्न लिखित विशेषताएं इस प्रकार हैं।

1. छोटों को प्रोत्साहन- बाल्यकाल में एक बार राम और भरत कन्दुक क्रीड़ा कर रहे थे। खेल अन्तिम दौर में था, विजय श्री राम के पक्ष में थी। गेंद राम के पाले में थी, किन्तु जीतने की स्थिति में भी राम ने गेंद भरत की ओर फेंक कर उन्हें विजयी घोषित करा दिया। यह थी अपने अनुजों के प्रति उदार भावनाएं।

2. किशोरावस्था- राम सदैव खतरों को जानबूझ कर लेते थे। विश्वामित्र जी ने जब राजा दशरथ से अपने किशोर बालकों को वन में यज्ञों की रक्षा के लिए तथा राक्षसों के हनन के लिए मांगा, तो बूढ़े दशरथ को अपनी सन्तानों के प्रति मोह उमड़ आया। पहले तो उन्होंने बहुत संकोच किया, किन्तु राम के आग्रह पर बच्चों को विश्वामित्र के साथ कर दिये। बाल्मीकि रामायण तथा रामचरित मानस के बाल्यकाण्ड में उन किशोरों के द्वारा आश्चर्य में डाल देने वाले कार्य इसके लिए पर्याप्त प्रमाण है कि राम लक्ष्मण ने किशोरावस्था में ही जानबूझ कर अनेक खतरे (चैलेन्ज) मोल लिये और उन पर विजय श्री प्राप्त कीं यह उनके चरित्र की विशेषता थी।

3. यद्यपि बहु विवाह प्रथा परिवार में बड़े-बड़े कलह उत्पन्न कर देती है, परन्तु राम ने अपनी मेधावृत्ति के अनुसार, दूरगामी परिणामों को देखते हुए अत्यन्त दूरदर्शितता का परिचय दिया। वे अपनी विमाता कैकेयी का सम्मान जन्मदायी माता कौशल्या से भी अधिक करते थे।

लक्ष्मण को अनेक बार उन्होंने समझाया कि माता कैकेई में हम तीनों भाईयों के प्रति कोई द्वेष नहीं है। राम ने वन गमन करते समय अत्यन्त श्रद्धा से माता कौशल्या के पहले विमाता कैकेई के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद मांगा था। भरत जब चित्रकूट में अपनी जन्मदायी माता कैकेई की आलोचना करने लगे, तब राम ने उन्हें, तत्काल आगे बोलने से रोक दिया।

उन्होंने वहां भी माता कैकेई की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस प्रकार परिवार को कलह से बचा लिया। सहो असि सहोमहिधेहि चित्रकूट में राम, सीता और लक्ष्मण यदि चाहते तो उन्हे अनेक लौकिक सुविधाये प्राप्त हो सकती थीं। किन्तु राम के सम्मुख एक आदर्श था महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए यदि घोर से घोर कष्ट उठाने पड़े तो भी 'सहो असि' की भावना के अनुसार कष्ट सहन करने के लिए सदा तैयार रहो, यह आदर्श उनके सामने था। उन्होंने वहां अनेकानेक कष्ट उठाये, परन्तु वहां के वनवासियों से कुछ भी सहायता कभी नहीं मांगी। रामायण इस बात का प्रमाण है कि यहीं से राम के जीवन का सबसे अधिक कष्ट पूर्ण जीवन और घटनाएं प्रारम्भ हुई। किन्तु वे तनिक भी टस से मस नहीं हुए।

5. सामाजिक न्याय के समर्थकः- वनवास के समय जब उनकी 'शबरी' से भेंट हुई, तो वे उसके निश्चल व्यवहार पर मुग्ध हो गये। शबरी द्वारा दिये गये खट्टे-मिट्ठे बेर उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक खा लिए। यह बात निराधार है कि शबरी उन बेरों को मुख से चख कर देती थी और राम उन झूठे बेरों को खाने लगे थे। हमारे यहां झूठा भोजन न करना तथा किसी अन्य को झूठा भोजन, फिर चाहे वह फल ही क्यों न हो, भेंट न करने की वैदिक प्रथा है। राम तो भीलनी के स्नेह और सेवा भाव पर अत्यन्त मुग्ध थे। उन्होंने उसके साथ उदारतापूर्ण व्यवहार किया।

6. नारीजाति के उद्धारकः- वनवासी जीवन में अहिल्या से भेंट होने पर जब उसके साथ यौन शोषण की बात सुनी, तब उन्होंने उसे धैर्य बंधाया। उसके पति गौतम को समझाया तथा यौन शोषक इन्द्र को दण्ड देने का आश्वासन दिया। राम के द्वारा यह कृत्य भारतीय इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

7. एक पत्नीव्रतधारीः- एक अवसर पर शूर्पनखा उनके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखती है। राम ने कहा- पर नारी पैनी छुरी, तीन ठोर ते खाय। धन हरे, यौवन हरे, मरे नरक ले जाय। कहते हैं, इस संसार में तीन प्रकार के अंधे होते हैं। यथा धनान्ध, कामान्ध और मदान्ध। शूर्पनखा कामान्ध थी, इस कारण उसे विवेक से काम करने का मार्ग नहीं सूझता था। वह राज परिवार की स्त्री थी।उसके आत्मसमर्पण को अस्वीकार कर राम ने उसकी प्रतिष्ठा रूपी नाक काट कर रख दी। नीतिकार ने ठीक ही कहा कि -प्रतिकार करने वाली स्त्री क्या नहीं कर सकती? शूर्पनखा ने ही अपनी प्रतिक्रिया स्वरूप अपने अग्रज रावण को मन गढ़न्त बातें कह कर उसे राम के विरूद्ध कर दिया। इस प्रकार उसने अपने भाई का परिवार व राज्य बरबाद करा दिया। यह घटना कामान्ध लोगों को अनेक शिक्षाएं देती है।

8. सन्देह बुरी बलाः- चित्रकूट में भरत अपने अग्रज राम से मिलने आ रहे थे। किन्तु लक्ष्मण को सन्देह हो गया और वे भरत पर कुपित हो गए। उन्होंने राम को अपना सन्देह कहा। राम ने उन्हें धैर्य बंधाते हुए विवेक से काम लेने की बात समझाई। उन्होंने कहा- भरत कृतघ्न नहीं हो सकता। वह हमारा भाई है। तुम उसके साथ कुछ अनिष्ट मत कर बैठना। लक्ष्मण पहले तो माने नहीं परन्तु, अन्त में चुप हो गए। राम भरत का यह मिलन संसार के इतिहास में अपना विशेष स्थान रखता है। यह घटना आज भी प्रेरणादायी है।

9. हताश सुग्रीव को जीवनदानः- बेचारा सुग्रीव हर दृष्टि से निराश बैठा था। पत्नी गई, राज्य गया और जीवन भी खतरे में पड़ गया। पत्नी हरण की पीड़ा का अनुभव राम को भी था। दोनों एक ही नाव के सवार थे। उन्होंने उसे नीति का वचन कहा- ''अनुज सुता, भगिनी, सुतनारी इन्हें विलोक पातकभारी'' और उसे धैर्य बंधाते हुए कहा- ऐसे पतित को मारने में पाप नहीं अपितु धर्म है। बालि ने भी मरते समय एक व्यंग्य कसा था- ''मैं बैरी सुग्रीव पियारा, कारण कौन नाथ मोहि मारा'' अरे राम। मैने तो तुम्हारी कोई हानि नहीं की थी। मैं समय पर तुम्हारी सहायता कर सकता था किन्तु अब मैं तुम्हारे मारने पर अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ।

10. नारी स्मिता का रक्षक जटायुः- वनवासी जटायु के जीवन का एक ध्येय मंत्र था जीवित रहते किसी की बहु बेटी का अपमान न होने दूंगा। बलवान दुष्ट से कभी न डरना, चाहे प्राण भले ही जाये। जटायु ने यह चरितार्थ कर दिखाया। राम ने भी कृतज्ञता के साथ उसकी आदर सहित अन्त्येष्टि कर दी।

11. विभीषण को राज तिलकः- भारतीय संस्कृति कभी भी विस्तारवादी और साम्राज्यवादी नहीं रही। राम ने रावण की मृत्यु के पश्चात उसके अनुज विषीषण को लंका का राज्य सौंप दिया। योगिराज श्रीकृष्ण चन्द्र ने भी अनेक अत्याचारी राजाओं को मारकर उनके पिता या पुत्रों को राज्य सौंप दिया। किन्तु वे स्वयं राजा नहीं बने।

12. हनुमान के प्रति अखण्ड प्रेमः- हनुमान जी आदर्श सेवक, त्यागी और सहिष्णु थे। राम ने भी अपने अन्तिम समय तक हनुमान को अपने सानिध्य में रखा। इससे हनुमान आज भी आदर्श महापुरुष माने जाते हैं।

इस प्रकार पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का पवित्र जीवन आज भी प्रासंगिक है। आज राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को उनके जीवन के सद्गुणों को धारण करने की बड़ी आवश्यकता है। यही कारण है कि महात्मा गांधी 'राम' के अनन्य भक्त और रामराज्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नरत थे। उनके मुख से अन्त में हे राम! ही निकला था। हे राम! हे राम! हे राम!!!

- सुकिरण अ/13, सुदामानगर, इन्दौर-452009(म.प्र.)

dkjksukok;jl % gYnh ls c<k,a jksx çfrjks/kd {kerk

स्वास्थ्य ही सम्पदा है, और हमें इसका ख्याल बखूबी रखना चाहिए। वर्तमान समय में इसका ध्यान रखना और भी जरूरी है, जब पूरी दुनिया घातक कोरोनावायरस से प्रभावित है। इम्युनिटी सिस्टम या प्रतिरक्षा प्रणाली तमाम बैक्टीरिया और वायरस से शरीर की रक्षा करती है, जिससे इंसान के बीमार पड़ने की संभावना काफी हद तक कम हो जाती है। इम्युनिटी सिस्टम के कमजोर होने पर ही इंसान कोरोनावायरस सहित तमाम महामारियों के संपर्क में जल्दी आ जाता है।

अपने इम्युनिटी सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए हमें प्राचीन भारतीय नुस्खों पर गौर करना चाहिए। ऐसे में हल्दी से बेहतर और भला क्या हो सकता है। हल्दी में करक्यूमिन नामक एक तत्व मौजूद है, जिसके चलते यह एंटी–इंफ्लेमेटरी, एंटीसेप्टिक और एंटी–बैक्टीरियल गुणों से समृद्ध है। हल्दी के इन्हीं लाभों को पाने के लिए खाना बनाते समय या रात को सोने से पहले गर्म दूध में एक चुटकी हल्दी का सेवन जरूर करें।

एसएनईसी–30 का आविष्कार करने वाले आरब्रो फामार्स्यूटिकल्स के डॉ. सुभाष अरोड़ा ने बताया कि करक्यूमिन में प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने के गुण मौजूद हैं, यह प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया में सुधार लाता है ताकि अतिसंवेदनशील प्रतिक्रिया से शरीर की रक्षा हो सके। ब्रोंकियल समस्याएं वास्तव में प्रतिरक्षा प्रणाली की अतिसंवेदनशील प्रतिक्रिया से उत्पन्न होती हैं, करक्यूमिन इन प्रतिक्रियाओं में तालमेल बिठाकर तुरंत राहत दिलाती है।

हल्दी में मुख्य जीवन रक्षक तत्वों में 3–5 प्रतिशत तक करक्यूमिन मौजूद है, यह पेड़–पौधों से उत्पन्न एक रासायनिक यौगिक है, जिसमें उपचार संबधी कई गुण मौजूद होते हैं।

हल्दी से सर्दी–खांसी, सांस लेने से संबंधित बीमारियां, ऊपरी श्वसन पथ में संक्रमण या इससे संबंधित बीमारियां, वायरल बुखार जैसी कई समस्याओं से निजात पाया जा सकता है। इससे ज्वलन में भी कमीं आती है। ऐसे में शरीर को स्वस्थ रखना है, तो समुचित मात्रा में हल्दी का सेवन रोजाना करना न भूलें।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 4 का शेष

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आर्यजनों को आह्वान

एवं मानवीय धर्म मानकर प्रधानमंत्री जी द्वारा दिये गये निर्देशों का पूरी ईमानदारी से पालन करें। स्वयं भी सुरक्षित रहें और अन्यों को भी सुरक्षित रखने में सहायता करें। जैसा कि विदित है कि अभी तक इस महामारी का कोई प्रभावी इलाज सामने नहीं आया है, लेकिन हम अपने–अपने घरों में स्वयं को सीमित कर लेते हैं तो निश्चित रूप से इस संक्रामक महामारी से हम निजात पा सकते हैं। प्राचीनकाल से ही हमारे ऋषियों ने यज्ञ द्वारा वातावरण को शुद्ध रखने, प्रदूषण मुक्त रखने तथा विषाणु मुक्त रखने की एक वैज्ञानिक विधि प्रचलित की थी। वर्तमान समय में उस यज्ञ की वैज्ञानिक विधि से भी हम अपने चारों तरफ के वातावरण को न केवल शुद्ध रख सकते हैं बल्कि रोग फैलाने वाले विषाणुओं से भी मुक्त कर सकते हैं। अतः मैं सभी आर्यजनों से निवेदन करता हूँ कि इस समय आप सब अपने घरों में औषधी युक्त सामग्री एवं सम्भव हो सके तो गाय के घी से प्रतिदिन हवन करते रहें और अपने परिचितों, रिश्तेदारों एवं अन्य लोगों को भी यज्ञ करने के लिए प्रेरित करें। इसके लिए यदि आवश्यक हो तो आर्य समाजों में औषधीयुक्त सामग्री की व्यवस्था भी रखें और यज्ञ करने के इच्छुक लोगों को उपलब्ध करायें। यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मः। यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। यज्ञ के माध्यम से हम दूसरों को जीवनी शक्ति प्रदान करते हैं। इससे जल, वायु, वातावरण, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की शुद्धि होती है। यज्ञ अनेक रोगों की प्रभावी प्राकृतिक चिकित्सा है। जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं जिससे स्वयं को सुख व प्रसन्नता मिले और दूसरों का उपकार हो वे सभी यज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ से विषैले जीवाणुओं का नाश होता है। यज्ञ में हम औषधीय सामग्री से युक्त जो आहुति देते हैं वह अनेक गुणा बढ़कर सर्वत्र फैल जाती है और उससे वातावरण शुद्ध होता है।

अतीत में आर्य समाज ने विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं अकाल, बाढ़, भूकम्प, महामारी आदि से पीड़ित मानवता की सहायता के लिए ऐतिहासिक सेवा कार्य किये हैं और अपने सहायता कार्यों से मानवता का पथ प्रशस्त किया है। इतिहास गवाह है कि प्राकृतिक आपदाओं के समय आर्य समाज ने हमेशा बढ़–चढ़कर भाग लिया है। आज पुनः कोरोना वायरस के रूप में आई आपदा ने मानव जाति को अत्यन्त संकट में डाल दिया है। मेरी सभी आर्य युवाओं से, कर्मठ कार्यकर्ताओं से और युवा संगठनों से विनम्र अपील है कि वे इस भयंकर आपदा में आगे आयें और प्रशासन से कहें कि हम आर्यसमाजी मानवता की सेवा करना चाहते हैं। आप जहाँ भी चाहें हमारा उपयोग कर सकते हैं। प्रशासन जैसे उचित समझेगा वह आपका उपयोग करेगा। इस कठिन समय में आर्य समाज को निश्चित रूप से आगे आना चाहिए और पीड़ितों की यथा सम्भव मदद करनी चाहिए। देश–विदेश में आर्य समाज की इकाई जहाँ भी कार्य कर रही हैं यदि सम्भव हो तो वे अपने आस–पास के क्षेत्र में रहने वाले उन गरीब लोगों के भोजन आदि की व्यवस्था करें जिन्हें इस सम्पूर्ण लॉकडाउन की वजह से आर्थिक संकट के दौर से गुजरना पड़ रहा है।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/- में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।